27-5-67 ओम् शान्तिः रात्रि क्लास

हर एक सेन्टर वाले अपने-2 सेन्टर का समाचार सुनावेंगे। यह(इलाहाबाद) सेन्टर है तीर्थ यात्रा पर। वहाँ
मेले लगते है। है भी झूठे मेले। सच्चा नही।त्रिवेणी नदी झूठ कह देते। कहते है कि एक गुप्त नदी है।
अन्यर्शया तो बहुत है नां। यहां भी कहते है कि गगां आती है। अब तुम बच्चे समझते हो कि वो सब
रोग है। दुनियां नही समझती। शास्त्रो के ऊपर मदार बहुत है। शास्त्रो को बहुत मानते है। भक्ति मार्ग है
तो शास्त्रों को ही मानना पडे। भक्ति मार्ग का सारा मदार शास्त्रो पर है।उनको कुछ भी पता नही
है कि सत्य किसको कहा जाता है। दुनियां नही जानती है। कहते भी है कि बाप सत्य बोलते है।बाप ने
सत्य नारायण की कथा सुनाई थी।लन्दन का राज्य था। इस पढ़ने पर प्रद मिला। पढाई तो है नां।पढाई तो
है नां। भक्ति मार्ग मे कोई सत्य नारायण की कथा सुनने से बन नही जाते। समझते है कि कोई बना था।
जो पास्ट हो गया है। उनको फिर भक्ति मार्ग की लाईन मे ले जाते है। पास्ट मे जो हो कर गये है उनका
गायन है। तुम बच्चे जानते हो किराईट क्या है रांग क्या है। रांग कर्तव्य करने पर मनुष्य को दुःख होता
है। अब यह बुधी मे है कि राईट बाप कब आते है।दुनियां नही जानती। तुम बच्चे यहां ज्ञान मार्ग मे
हो। तुमको राईट रांग का पता है। कुम्भ के मेले पर स्नान करते है कि पाप कटेंगें। ऐसे तो नही नां कि
और मनोकामानाये पुरी होगी। सबेस मागतें रहते है। अब तुम बच्चो को तो मागेंन से मरना भला। बाप
कहते है मामेकम् याद करो। बाप को आकर पतित से पावन बनाना हो है। सत्य है तो बाप भी
आया है। बाप ने परिचय दिया है कि मै आया हूं राईट रास्ता बताने। बाप कहते है कि तुमको मागनें की
दरकार नही। बाप रास्ता बताते है। कहते है मेरा यह पार्ट है। ड्रामा की आदि मध्य अन्त को भी तुम जान
ते हो। बच्चे हो समझतेग है कि इस मृत्यु लोक मे यह अन्तिम ह जन्म है।हम तो अमर बाबा से अमर
पार्वती
कथा सुन रहे है। बाकी यहां शकरा को फिर अमरकथा कैसे सुनावेंगे। तुम बच्चे जानते हो कि अब हम
वर्थ पाऊंड बन रहे है। बाप आया हुआ है दुनियां नही जानती है। तुम ऐक्टर्स हो नां। आत्मा कितनी
छोटीबिन्दी है। वो फिर ऐक्टर है। जैसे बाप के पास सारे ड्रामा की नालेज है वैसे ही बच्चो को भी होनी
चाहिये। ड्रामा का किसीको भी पता नही है। तुम अभी मलुक फरिशते बन रहे हो। मनुष्य जनावरो मिसल
मरेंगें। यह ज्ञान तुम कोशिश कर भक्तों को सुनाते रहो। मनुष्य बिलकुल ही घोर अन्धेरे मे है।कहते है कि
शास्त्रो को माने वा तुमको?परन्तु धीरे-2 यह सब समझते जावेंगें। जानते हो बाबा आया हुआ है अमरकथा
सनाने। नाम तो बहुत दे दिये है। कथा अर्थात कहानी। कहानी को नालेज नही कहा जाता।शास्त्रो मे भी
पास्ट की कहानियां ही है। जो पास्ट मे था वो अब प्रेजन्ट है। बाप भी प्रेजन्ट मे सुना रहे है। कहते
है कि हर 5000वर्ष बाद हमको आना पड़ता है। कल्प-2 तुम सुनते हो। फिर तो कहते हो कल्प-2 बाबा
हम आकर मिलते है। बेहद की ह पढाई तो बेहद का ही सन्यास है। बेहद दवारा बेहद की हीबात है।
****
बेहद का मेला सतयुक मे फिर हद का मेला है। रावण राज्य मे है हद का। समझानी तो बहुत सहज है।
कल्प पहले जिन्होने समझा है वो ही समझेंगें। शिव के मन्दिर तो बहुत है नां। जाकर समझाओं कि
यह बाप तो ज्ञान काअमगर है। सुख, शान्तिः का सागर है। इसे पढाया भी था। राज-योग भी सिखाया
था। भारत को ही सूर्यवंशी राजधानी देकर गये थे। जानते तो हो नां कि बेराबर यह स्वर्ग के मालिक है।
जानते हो कि कल्प-2 बाप आकर पढ़ाते है। उस पढाई ही मे रमण करना चाहिये। औरो को भी पढाना चाहिये
इसमे कोई तकलीफ नही है। याद की यात्रा है गुप्त। गुप्त बाबा गुप्त पढाई। सब कुछ गुप्तही गुप्त है।
देने
का कब खयाल नही आना चाहिये। तुम्ही लेते हो। हम 2।जन्मलियेग सुदामा मिसल महल लेते
है। फिर दिया वा लिया?हमेन दिया यह संकल्प आने पर ही रांग होजाता है।हम बाबा को देते है भ
भविष्य 21जन्म के लिय लेने लिये। ऐसे अन्दर मे ज्ञान आना चाहिये। यह(ब्रह्मा बाबा)कब समझेगे कि हमने
बाबा को दिया? दो मुठी देकर विश्व की बादशाही ले ली तो वो देना थोडे हुआ। झोली झट भर लेते है।
भोलानाथ है ना। यह ड्रामा ही बना हुआ है। अच्छा आज्ञाकारी बच्चो को याद प्यार और गुडनाईट